

Syllabus and Semester Course Scheme
Academic year 2025-26



B.A. – Sanskrit
Exam.-2025 - 2026

UNIVERSITY OF KOTA

**MBS Marg, Swami Vivekanand Nagar,
Kota - 324 005, Rajasthan, India
Website: uok.ac.in**

BACHELOR OF ARTS
SUBJECT - SANSKRIT
SCHEME OF SEMESTER EXAMINATION, 2025-2026
Course Code : SAN 5117 T

राष्ट्रीयता एवं गौरवबोध का भाव प्रकट होगा। समसामयिक समाज के सुधार की दिशा में सांस्कृतिक एवं पर्यावरण चेतना जगृत होगी। सनातन धर्म एवं दर्शन के अध्ययन से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा। व्याकरण के अध्ययन से भाषा की सरलता एवं शुद्धता का सम्यक् ज्ञान हो सकेगा। जो कि राष्ट्र के समन्वयवादी विकास की धारा में सहायक सिद्ध होगा।

अधिगम फलितांश

भारतीय संस्कृति के ज्ञान से विद्यार्थियों में राष्ट्र की अखण्डता, उदात्तता एवं देशभक्ति का गौरवबोध प्रबल होगा। संस्कृत साहित्य के अध्ययन से मानवीय जीवनमूल्यों का विकास जैसे गुरुभक्ति का भाव, जीवमात्र के प्रति दयाभाव का संचार एवं अध्यात्म भाव आदि सर्वर्धित होगा। संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषाशास्त्र की निपुणता के साथ व्यावहारिकता में दक्षता आएगी।

बी.ए. सेमेस्टर प्रथम

संस्कृत साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र— पद्यसाहित्य, भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व, व्याकरण एवं अलंकार

Paper Code : SAN 101

समय: 3 घण्टे

पूर्णांक—100

नोट:— प्रश्न पत्र का निर्माण हिन्दी भाषा में किया जायेगा। इस प्रश्न पत्र को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है —

खण्ड अ

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 02 लघु प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होंगे। प्रत्येक लघु प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में हो।

10×2 = 20 अंक

खण्ड ब

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होंगे। प्रत्येक इकाई में से एक प्रश्न का चयन करते हुए कुल 5 प्रश्न हल करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 300 शब्दों में हो। 5×16 = 80 अंक

इस प्रश्न पत्र का समस्त पाठ्यक्रम निम्न प्रकार से पाँच इकाइयों में विभाजित होगा —

1. इकाई प्रथम — रघुवंशम् 'द्वितीय सर्ग'
2. इकाई द्वितीय — भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व — पृष्ठभूमि, विशेषताएँ, वर्णव्यवस्था एवं आश्रमव्यवस्था, त्रिविध ऋण।
3. इकाई तृतीय — भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व — षोडश संस्कार, पंच महायज्ञ, प्राचीन भारत के प्रमुख शिक्षा केन्द्र, भारतीय संस्कृति का मानव कल्याण में योगदान।
4. इकाई चतुर्थ — शब्द रूप (राम, कवि, गुरु, पितृ, लता, मति, नदी, ज्ञान, इदम्, तद्, अस्मद्, युष्मद्)।
धातुरूप (भू, पठ्, कृ, अस्, दा, लभ्)।
5. इकाई पंचम — अलंकार — काव्य दीपिका (अष्टमशिखा—भेदोपभेदरहित) निम्नांकित अलंकार :— अनुप्रास, यमक, श्लेष, स्वभावोक्ति, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, विभावना, विशेषोक्ति।

विशेष निर्देश — खण्ड 'ब'

इकाई प्रथम से एक पद्य की व्याख्या संस्कृत माध्यम से और एक व्याख्या हिन्दी माध्यम से (8+8 = 16 अंक) पूछी जाएगी। इकाई द्वितीय एवं तृतीय में से एक-एक प्रश्न एवं दो-दो टिप्पणी पूछी जाएगी। (8+8

= $16 \times 2 = 32$ अंक) इकाई चतुर्थ में से चार शब्दरूप व चार धातुरूप पूछे जाएंगे ($8+8 = 16$ अंक)
इकाई पंचम में से दो अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण संस्कृत में देते हुए हिन्दी में स्पष्टीकरण देना है
($8+8=16$ अंक)।

आन्तरिक मूल्यांकन – शैक्षणिक अंश **50 अंक**, जिसका अंक विभाजन इस प्रकार है—

विषय आधारित लिखित परीक्षा (मिड टर्म) – **30 अंक**

विषय आधारित सेमीनार/प्रोजेक्ट रिपोर्ट/प्रस्तुति/मौखिक आदि = **20 अंक**

सहायक ग्रंथ

1. रघुवंशम् (मल्लिनाथ टीकासहित) – गोपाल रघुनाथ – मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग)– कालिदास – डॉ. बाबूराम त्रिपाठी।
3. रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)– कालिदास – डॉ. रूपनारायण त्रिपाठी, आदर्श प्रकाशन जयपुर।
4. भारतीय संस्कृति – प. शिवदत्त ज्ञानी।
5. भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व – डॉ. श्रीकृष्ण ओझा— आदर्श प्रकाशन, जयपुर।
6. भारतीय संस्कृति – डॉ. प्रीति प्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।
7. प्राचीन भारतीय संस्कृति के तत्त्व – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी।
8. प्राचीन भारत का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास – डॉ. निरंजन सिंह, (योगमणि), रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर।
9. प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी— डॉ कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
10. वृहद् अनुवाद चन्द्रिका— चक्रधर नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
11. काव्य दीपिका (अष्टम शिखा) – डॉ. श्रीकृष्ण ओझा— आदर्श प्रकाशन, जयपुर।
12. काव्य दीपिका (अष्टम शिखा) – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी।
13. सद्गुणालंकार – डॉ. हिन्दू केसरी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
14. काव्य दीपिका (अष्टम शिखा)— रूपनारायण त्रिपाठी, रचना प्रकाशन जयपुर।

बी.ए. सेमेस्टर द्वितीय

संस्कृत साहित्य

द्वितीय प्रश्न पत्र – नाटक, कथा साहित्य, व्याकरण एवं अनुवाद

Paper Code : SAN 102

समय: 3 घण्टे

पूर्णांक—100

नोट:— प्रश्न पत्र का निर्माण हिन्दी भाषा में किया जायेगा। इस प्रश्न पत्र को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है –

खण्ड अ

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 02 लघु प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होंगे। प्रत्येक लघु प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में हो।

$10 \times 2 = 20$ अंक

खण्ड ब

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होंगे। प्रत्येक इकाई में से एक प्रश्न का चयन करते हुए कुल 5 प्रश्न हल करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 300 शब्दों में हो। $5 \times 16 = 80$ अंक

इस प्रश्न पत्र का समस्त पाठ्यक्रम निम्न प्रकार से पाँच इकाइयों में विभाजित होगा –

1. इकाई प्रथम – स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत)
2. इकाई द्वितीय— हितोपदेश (मित्रलाभ)

3. इकाई तृतीय – लघु सिद्धान्त कौमुदी (संज्ञा प्रकरण एवं अच् संधि)
4. इकाई चतुर्थ – लघु सिद्धान्त कौमुदी (हल् एवं विसर्ग संधि)
5. इकाई पंचम – अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत)

विशेष निर्देश – खण्ड 'ब'

इकाई प्रथम में से एक पद्य की व्याख्या संस्कृत माध्यम से और एक पद्य की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी माध्यम से (8+8=16 अंक) पूछी जाएगी। इकाई द्वितीय में से एक गद्य अथवा पद्य की सप्रसंग व्याख्या तथा एक कथा का सार पूछा जायेगा (8+8 = 16 अंक)। इकाई तृतीय एवं चतुर्थ में से दो भाग (अ) दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या (2×4 = 8) और (ब) दो पदों की सूत्रोल्लेखपूर्वक सिद्धि (2×4 = 8)। इकाई पंचम में से आठ वाक्यों का हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद। (2×8 = 16)

आन्तरिक मूल्यांकन – शैक्षणिक अंश **50 अंक**, जिसका अंक विभाजन इस प्रकार है—

विषय आधारित लिखित परीक्षा (मिड टर्म) – **30 अंक**

विषय आधारित सेमीनार/प्रोजेक्ट रिपोर्ट/प्रस्तुति/मौखिक आदि = **20 अंक**

सहायक ग्रन्थ –

1. स्वप्नवासवदत्तम् (संस्कृत हिन्दी व्याख्या) – जगन्नारायण पाण्डेय।
2. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी।
3. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. मुरारी लाल अग्रवाल— साहित्य सरोवर प्रकाशन, आगरा।
4. हितोपदेश (मित्र लाभ)— डॉ. विश्वनाथ शर्मा हंसा प्रकाशन, जयपुर।
5. हितोपदेश— डॉ. भीमराज शर्मा हंसा प्रकाशन, जयपुर।
6. हितोपदेश (मित्र लाभ)— डॉ. बाबूराम त्रिपाठी।
8. लघु सिद्धान्त कौमुदी (संज्ञा प्रकरण एवं सन्धि प्रकरण)— डॉ. पुष्करदत्त शर्मा, अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर।
9. लघु सिद्धान्तकौमुदी 'भैमी' व्याख्या— पं. भीमसेन शास्त्री (प्रथम भाग), 'भैमी' प्रकाशन, दिल्ली।
10. लघु सिद्धान्त कौमुदी— (संधि प्रकरण)— डॉ. अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
11. प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी— डॉ. कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. वृहद् अनुवाद चन्द्रिका— चक्रधर नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

